इन्क़िलाबी नज़र
आवाज़ ... आम आदमी की
लखनऊ, मंगलवार, 21 नवम्बर 2023
जो व्यक्ति भी विकास के लिए खड़ा है उसे हर एक रूढ़िवादी चीज की आलोचना करनी होगी , उसमे अविश्वास करना होगा तथा उसे चुनौती देनी होगी।
-भगत सिंह
वर्ष 16 अंक 77 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ- 12
तापमान - अधिकतम 28.4°C (+0.0) न्यूनतम 16.6°C(+3.9) सेंसेक्स 65,655.15 (-187.75) निफ्टी 19,694.00 (-037.80) सोना 61,790 चांदी 76,000 मुद्रा - डालर 83.34 दिरहम 22.69 रियाल 22.22

एराज मेडिकल कॉलेज निदेशक चिकित्सा ने बताया क्या है सीओपीडी

लखनऊ (सं)। एराज मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के निदेशक चिकित्सा शिक्षा प्रोफेसर व श्वसन चिकित्सा विभाग के एचओडी प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद ने बताया कि विश्व सीओपीडी दिवस का आयोजन स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों और सीओपीडी रोगी के सहयोग से ग्लोबल इनिशिएटिव फॉर क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव लंग डिजीज गोल्ड द्वारा किया जाता है।

सीओपीडी एक सामान्य रोकथाम योग्य और इलाज योग्य बीमारी है जो लगातार वायु प्रवाह सीमा और वायुकोशीय की असामान्यताओं के कारण होता है। विश्व सीओपीडी दिवस के लिए इस वर्ष की थीम सांस लेना ही जीवन है शीघ्र कार्य करें है जिसका उद्देश्य प्रारंभिक फेफड़ों के स्वास्थ्य, शीघ्र निदान और हस्तक्षेप

प्रो. राजेन्द्र प्रसाद

के महत्व को उजागर करना है। यह पहचाना गया है कि प्री-सीओपीडी और प्रिजर्व्ड रेशियो विद इम्पेयर्ड स्पाइरोमेट्री जैसी पूर्ववर्ती स्थितियां शीघ्र निदान और शीघ्र उपचार के नए अवसर प्रदान कर सकती हैं। विश्व स्तर पर 30.79 वर्ष आयु वर्ग के 391.9 मिलियन लोग सीओपीडी से पीड़ित हैं जो निश्चित अनुपात की स्वर्ण परिभाषा का उपयोग करते हैं द बर्डन ऑफ ऑब्सट्रक्टिव लंग डिजीज ने पहले की तुलना में फेफड़ों के खराब कार्य की सूचना दी। सीओपीडी पुरुषों और महिलाओं के लिए क्रमशः 11.8 प्रतिशत और 8.5 प्रतिशत हैं। धूम्रपान न करने वालों में सीओपीडी की व्यापकता 3.11 प्रतिशत है। अगले 40 वर्षों में सीओपीडी का प्रसार बढ़ने की उम्मीद है और 2060 तक सालाना 5.4 मिलियन से अधिक मौतें हो सकती हैं। भारत में सीओपीडी से हर साल 0.84 मिलियन मौतें होती हैं। भारत में क्रोनिक श्वसन रोग के बोझ में से सीओपीडी बीमारी के बोझ का 50 प्रतिशत से अधिक है। सीओपीडी के प्रारंभिक चरण अक्सर पहचाने नहीं जाते हैं क्योंकि कई लोग सांस फूलना, पुरानी खांसी और बलगम आने जैसे लक्षणों को उम्र बढ़ने का सामान्य हिस्सा या धूम्रपान का अपेक्षित परिणाम मानते हैं। सीओपीडी का मुख्य जोखिम कारक तम्बाकू धूम्रपान है जो केवल 50 प्रतिशत भारतीय सीओपीडी रोगियों में मौजूद है लेकिन अन्य जोखिम कारक जैसे बायोमास ईंधन जोखिम और वायु प्रदूषण घर के अंदर और साथ ही बाहरी उपचारित तपेदिक आदि भी बीमारी और इसके प्रसार में योगदान करते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि अगरबत्ती, मच्छर भगाने वाली कॉइल और लिक्विडेटर्स का धुआं भी सीओपीडी का कारण बन सकता है। वैश्विक स्तर पर 3 अरब से अधिक लोग बायोमास ईंधन के संपर्क में हैं। भारत में लगभग 681 मिलियन घर खाना पकाने और हीटिंग के लिए बायोमास ईंधन पर निर्भर हैं।